पर्वत प्रदेश में पावस

–सुमित्रानंदन पंत

काव्यांश

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता प्रकृति प्रेमी कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है। उन्हें पर्वतीय प्रदेश से विशेष लगाव था। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसका मन पहाड़ों पर जाने को न मचलता हो। जिन्हें सुदूर हिमालय तक जाने का अवसर नहीं मिलता है वे अपने आसपास के पर्वत प्रदेशों में जाकर प्रकृति का आनंद अवश्य लेते हैं । ऐसे में यदि किसी कवि की कविता पढ़कर घर की चारदीवारी में बैठे–बैठे ही सुंदर प्राकृतिक दृश्यों का अनुभव प्राप्त हो जाए तो कहना ही क्या है। ऐसा ही कुछ अनुभव इस कविता को पढ़कर भी होता है।

Topic Notes

- पाठ का सार
- पाठ में निहित केंद्रीय भाव

पाठ का सार

काव्यांश — 1

पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश,
मेखलाकार पर्वत अपार,
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार,
नीचे जल में निज महाकार।
जिसके चरणों में पला ताल,
दर्पण-सा फैला है विशाल।

शब्दार्थ

पावस ऋतु- वर्षा ऋतु, *वेश*- रूप, *मेखलाकार*- गोल आकार, *अपार*- दूर तक, *सहस्र*- हज़ारों, *दृग*- नयन, *सुमन*- फूल, *फाड़*- खोलकर, *अवलोक*- देखना, *निज*- अपना, *महाकार*- विशाल आकार, *ताल*- तालाब, *दर्पण*- शीशा।

व्याख्या

कवि पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु के दौरान प्रकृति में हो रहे निरंतर परिवर्तन को महसूस कर रहे हैं। उस पर्वतीय क्षेत्र में दूर तक गोलाकार में पर्वत नज़र आ रहे थे जिनके ऊपर हजारों फूल खिले हुए थे। नीचे एक विशाल तालाब था जिसमें पर्वतों की परछाई पड़ रही थी। इस सुंदर दृश्य को देखकर कवि ने कल्पना की है मानो वे पर्वत अपनी हज़ारों पुष्प रूपी आँखों से नीचे स्थित तालाब में अपनी छवि को लगातार निहार रहे हों। वह तालाब उन पर्वतों के चरणों में बहुत समय से स्थित है और विशालकाय पर्वतों के लिए वह दर्पण का काम कर रहा है।

शिल्प सौंदर्य

(1) विभिन्न अलंकारों के सुंदर प्रयोग से कविता अत्यधिक रोचक बन गई है।
(2) 'पर्वत प्रदेश', 'परिवर्तित प्रकृति' में अनुप्रास अलंकार है।
(3) 'पल-पल', 'बार-बार' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(4) 'दृग सुमन' में रूपक अलंकार है।
(5) 'दर्पण-सा' में उपमा अलंकार है।
(6) पर्वतों का मानवीकरण किया गया है।
(7) लयात्मकता का समावेश है।
(8) कवि की कल्पनाशक्ति सराहनीय है।

भाव सौंदर्य

पर्वतों के विशाल आकार और तालाब में नज़र आ रही उनकी परछाई का चित्रात्मक वर्णन किया गया है।

उदाहरण 1. **'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?**

[CBSE 2012, NCERT]

उत्तर :सहस्र का अर्थ है हजारों, दृग मतलब नेत्र, सुमन मतलब पुष्प अर्थात् हजारों पुष्प रूपी नेत्र। कवि ने इस पद का प्रयोग उन हजारों फूलों के लिए किया है जो पर्वतों के ऊपर खिले हुए हैं। कवि को तालाब में विशाल पर्वतों की परछाई नज़र आ रही है जिसे देखकर उन्होंने कल्पना की है कि यह पर्वत अपनी हजारों पुष्प रूपी आँखों से नीचे तालाब रूपी दर्पण में अपनी परछाई देख रहे हैं। कवि की यह कल्पना मानवीकरण अलंकार का सुंदर उदाहरण है।

काव्यांश — 2

गिरि का गौरव गाकर झर-झर,
मद में नस-नस उत्तेजित कर,
मोती की लड़ियों से सुंदर,
झरते हैं झाग भरे निर्झर।

शब्दार्थ

गिरि- पर्वत, *गौरव*- यशगान, *मद*- आनंद, *उत्तेजित*- उकसाकर, *झरते*- बहते, *निर्झर*- झरने।

व्याख्या

पर्वतीय क्षेत्र में बहते हुए सुंदर झरनों की आवाज़ सुनकर कवि ने कल्पना की है मानो वे झरने पर्वतों की प्रशंसा के गीत गाते हुए बह रहे हों। ऊँचाई से गिरने के कारण झरनों के पानी में झाग पैदा हो जाता है जिसके कारण वह दूर से देखने में चाँदी जैसे चमकीले, सफेद नज़र आते हैं। झरनों का यह आकर्षक रूप देखकर कवि ने कहा है कि झरने मोती की लड़ियों के समान सुंदर लग रहे हैं और इस संपूर्ण दृश्य की शोभा में चार चाँद लगा रहे हैं।

शिल्प सौंदर्य

(1) 'गौरव गाकर', 'मद में' में अनुप्रास अलंकार है।
(2) 'झर-झर', 'नस-नस' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(3) 'लड़ियों से सुंदर' में उपमा अलंकार है।
(4) झरना को गीत गाते हुए दिखाया गया है जिसमें मानवीकरण अलंकार है।
(5) काव्यांश में लयात्मकता है।
(6) चित्रात्मक शैली ने प्राकृतिक सौंदर्य को जीवंत बना दिया है।

भाव सौंदर्य

झरनों के अनुपम सौंदर्य, उनकी झर-झर की मधुर ध्वनि का सुंदर वर्णन कवि ने किया है।

उदाहरण 2. **झरने कविता में किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?**

[CBSE 2011, NCERT]

उत्तर : पर्वतीय क्षेत्र में बहते हुए झरनों से जो ध्वनि उत्पन्न हो रही है उसे सुनकर लगता है मानो वे पर्वतों की प्रशंसा के गीत गाते हुए बह रहे हैं। ऊँचाई से गिरने के कारण उनमें जो झाग उत्पन्न हो रही है वह मोती की लड़ियों के समान सुंदर लग रही है, जो उस पूरे प्राकृतिक नजारे की खूबसूरती में चार चाँद लगा रही है।

काव्यांश – 3

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर,
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर,
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर,
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

शब्दार्थ

गिरि- पर्वत, *उच्चाकांक्षाएँ-* बड़ी बड़ी इच्छाएँ, *तरुवर-* वृक्ष, *नीरव-* सूना, *नभ-* आकाश, *अनिमेष-* लगातार, *अटल-* अडिग।

व्याख्या

पर्वतों पर लगे ऊँचे-ऊँचे वृक्षों को देखकर कवि को ऐसा लग रहा है मानो वह वृक्ष पर्वतों के हृदय से निकलने वाली ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ हैं। पर्वतों की आकांक्षाएँ आकाश को छूने की हैं। वृक्ष बिलकुल स्थिर हैं, अटल हैं। कवि को उनकी स्थिरता में उनकी उदासी झलकती दिखती है। कवि के अनुसार वे वृक्ष इसलिए उदास हैं क्योंकि वे पर्वतों की आकाश को छूने की इच्छाओं को पूरा नहीं कर पा रहे हैं।

शिल्प सौंदर्य

(1) 'उठ-उठ' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(2) 'नीरव नभ' में अनुप्रास अलंकार है।
(3) 'वृक्षों का आकाश की ओर ताकना' में मानवीकरण अलंकार है।
(4) 'उच्चाकांक्षाओं से तरुवर' में उपमा अलंकार है।
(5) चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।

भाव सौंदर्य

विशाल पर्वतों पर लगे अनगिनत ऊँचे-ऊँचे वृक्षों को पर्वतों की आकांक्षाएँ कहा गया है। उनकी स्थिरता में कवि को उनकी उदासी दिखाई दे रही है।

उदाहरण 3. **'अटल, अडिग कुछ चिंता पर' किसके लिए प्रयोग किया गया है? इससे मानव-मन की कौन सी विशेषता प्रतिबिंबित होती है?** **[NCERT]**

उत्तर : पर्वतों पर लगे ऊँचे-ऊँचे वृक्षों को कवि ने पर्वतों के हृदय से निकलने वाली ऊँची-ऊँची आकांक्षाओं के रूप में देखा है। उन्हें वे वृक्ष आकाश की ओर देखते हुए से ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानो वे पर्वतों की आकांक्षाएँ हैं जो आकाश को छूने में असमर्थ हैं इसलिए अटल, अडिग और चिंतित नज़र आ रहे हैं। वास्तव में घने बादलों के छा जाने से पूरा वातावरण एकदम शांत और स्थिर हो गया है, पेड़ों में कोई हलचल नहीं है, उसी को उन्होंने चिंतित कहकर दर्शाया है। इससे मानव-मन के वह भाव परिलक्षित हो रहे हैं जब वह इच्छाएँ पूरी न होने पर उदास और निराश हो जाता है।

काव्यांश – 4

उड़ गया अचानक लो भूधर,
फड़का अपार पारद के पर।
रव-शेष रह गए हैं निर्झर,
है टूट पड़ा भूपर अंबर।

शब्दार्थ

भूधर- पहाड़, *पारद-* चमकीले बादल, *पर-* पंख, *रव-* शोर, *शेष-* बाकी, *भूपर-* धरती पर, *अंबर-* आकाश ।

व्याख्या

अचानक घने बादल छा जाते हैं और इस संपूर्ण दृश्य को ढक लेते हैं जिसकी कल्पना कवि ने इस प्रकार की है कि विशाल पर्वत बादलों के पंख लगाकर कहीं दूर उड़ गए हैं । तभी मूसलाधार वर्षा शुरू हो जाती है और वातावरण भयभीत कर देने वाला होता है। ऐसा आभास होता है मानो आकाश धरती पर टूट पड़ा हो। केवल झरनों के बहने का शोर ही सुनाई देता है।

शिल्प सौंदर्य

(1) भूधर, निर्झर जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग है।
(2) झरनों का सजीव वर्णन किया गया है।
(3) चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।
(4) सरल, सहज और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग है।

भाव सौंदर्य

पर्वतीय क्षेत्र में मौजूद सुंदर दृश्य किस प्रकार पलभर में बदल जाता है, इसका सुंदर वर्णन कवि ने किया है।

उदाहरण 4. **पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

[CBSE 10, NCERT]

उत्तर : पावस अर्थात् वर्षा ऋतु में प्रकृति के रूप में निरंतर परिवर्तन नज़र आते हैं। विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्र में जहाँ सामान्यत: बड़े-बड़े पर्वत, तालाब, झरने, ऊँचे-ऊँचे वृक्ष नज़र आते हैं, वर्षा ऋतु में काले बादलों के छा जाने से वह सब अदृश्य हो जाते हैं, केवल झरनों के बहने का शोर सुनाई देता है। अचानक तेज़ वर्षा शुरू होने से ऐसा आभास होने लगता है मानो आकाश धरती पर टूट पड़ा हो। यह दृश्य अद्‌भुत, अलौकिक नज़र आता है।

काव्यांश – 5

धँस गए धरा में सभय शाल,
उठ रहा धुआँ जल गया ताल।
यों जलद-यान में विचर-विचर,
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

शब्दार्थ

धरा- धरती, *सभय*- भय के कारण, *जलद*- बादल, *विचर*- घूम, *इंद्रजाल*- जादू का खेल।

व्याख्या

घने बादलों ने संपूर्ण प्राकृतिक दृश्य को ढक लिया और तेज वर्षा होने लगी। बड़े-बड़े पेड़ जो अभी तक वहाँ दृष्टिगत हो रहे थे, नज़र आने बंद हो गए मानो डर के कारण धरती में धँस गए हों। तालाब का जल अभी तक स्थिर था, तेज वर्षा का जल उसमें गिरने पर फुहार उठने लगी। दूर से देखने पर ऐसा लगा मानो तालाब जल रहा है और उसमें से धुआँ निकल रहा है। बादल वहाँ उड़ते हुए नज़र आ रहे थे और ऐसा लग रहा था कि बादलों के वाहन में स्वयं इंद्र देवता विराजमान हैं और यहाँ घूम-घूमकर कोई जादू का खेल खेल रहे हैं। यह संपूर्ण दृश्य अद्‌भुत, अलौकिक प्रतीत हो रहा है। इसी को कवि ने इंद्रजाल कहा है।

शिल्प सौंदर्य

(1) पद में तुकांत शब्दों का प्रयोग है।

(2) 'विचर-विचर' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(3) सरल, सहज, प्रभावशाली भाषा का प्रयोग है।

(4) चित्रात्मक शैली के माध्यम से अलौकिक दृश्य को जीवंत बना दिया गया है।

भाव सौंदर्य

पर्वतीय क्षेत्र में निरंतर परिवर्तित हो रहे प्राकृतिक दृश्यों का सजीव वर्णन किया गया है।

उदाहरण 5. **इंद्रजाल किसे कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।** **[NCERT]**

उत्तर : कवि 'सुमित्रानंदन पंत' ने पर्वतीय प्रदेश के सुंदर दृश्य का वर्णन किया है जिसमें बड़े-बड़े पहाड़, तालाब, झरने और वृक्षों पर लगे हजारों फूल और ऊँचे-ऊँचे पेड़ नज़र आ रहे हैं। किंतु यह संपूर्ण दृश्य नज़र आना बंद हो जाता है जब घने बादल उसको ढक लेते हैं और अचानक तेज वर्षा होने पर तो संपूर्ण दृश्य ही बदल जाता है। अब जो नजारा आँखों के सामने होता है वह अलौकिक-सा लगता है। जिसे देखकर महसूस होता है मानो स्वयं इंद्र देवता वहाँ मौजूद हों और कोई जादू का खेल खेल रहे हों । इसी अलौकिक दृश्य को कवि ने इंद्रजाल कहा है।

उदाहरण 6. **शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए ?** **[NCERT]**

उत्तर : पर्वतीय क्षेत्र में कवि को बड़े-बड़े पहाड़, तालाब, झरने, पहाड़ों पर लगे पेड़ नज़र आ रहे थे। किंतु बादल छा जाने और मूसलाधार वर्षा शुरू होने पर सब कुछ अदृश्य हो गया। पेड़ भी नज़र आने बंद हो गए। उनके लिए लेखक ने कल्पना की है मानो वे इतनी तेज़ वर्षा और घने बादलों के छा जाने से भयभीत हो गए हैं और डर के कारण धरती में जाकर छुप गए हैं।

उदाहरण 7. **काव्यांश पर आधारित :**

पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश,
मेखलाकार पर्वत अपार,
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार,
नीचे जल में निज महाकार।
जिसके चरणों में पला ताल,
दर्पण-सा फैला है विशाल।

(क) कवि ने किस समय और स्थान का वर्णन किया है?

(i) ग्रीष्म ऋतु-पर्वतों का क्षेत्र
(ii) वर्षा ऋतु-महानगर
(iii) वर्षा ऋतु-पर्वतीय क्षेत्र
(iv) शीत ऋतु-पर्वतीय क्षेत्र

(ख) पर्वतों के लिए मेखलाकार शब्द का प्रयोग किया गया है क्योंकि वह–

(i) बहुत विशाल हैं
(ii) दूर तक फैले हुए हैं
(iii) गहरे नीले रंग के हैं
(iv) गोल आकार में फैले हुए हैं

(ग) पर्वतों के लिए दर्पण की भूमिका कौन निभा रहा है?

(i) विशाल तालाब **(ii) सहस्त्र सुमन**
(iii) ऊँचे-ऊँचे वृक्ष **(iv) पावस ऋतु**

(घ) तालाब किसके चरणों में पल रहा था?

उत्तर : **(क)** *(iii) वर्षा ऋतु - पर्वतीय क्षेत्र*

(ख) *(iv) गोल आकार में फैले हुए हैं*

(ग) *(i) विशाल तालाब*

व्याख्यात्मक हल : पर्वतों की परछाई तालाब में नज़र आ रही है मानो वे उस तालाब रूपी दर्पण में अपनी छवि निहार रहे हों।

(घ) तालाब के पर्वतों के नीचे स्थित होने के कारण ऐसा कहा गया है कि वह उन पर्वतों के चरणों में ही पल रहा है।

पाठ में निहित केन्द्रीय भाव

कवि ने एक ऐसे दृश्य का वर्णन किया है जब दूर तक पर्वत शृंखला गोलाकार में फैली हुई है। उसके बीचोंबीच स्थित तालाब में पर्वतों की परछाई पड़ रही है जिसे देखकर ऐसा लगता है मानो पर्वत अपनी हजारों पुष्प रूपी आँखों से तालाब रूपी दर्पण में लगातार अपनी छवि को निहार रहे हैं। उच्च पर्वतीय क्षेत्र में झरने बहते हुए जो ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं उसे सुनकर ऐसा लगता है मानो वे पर्वतों की प्रशंसा के गीत गा रहे हों और ऊँचाई से गिरने के कारण झरनों में जो झाग पैदा हो रही है मानो मोती की सुंदर लड़ियाँ हों। पर्वतों पर लगे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष देखकर कवि ने यह कल्पना की है मानो वे उन पर्वतों के हृदय से निकलने वाली ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ हों। इस प्रकार यह संपूर्ण दृश्य अद्भुत और अलौकिक प्रतीत हो रहा है जिसे कवि ने इंद्रजाल यानि इंद्र देवता द्वारा रचा जा रहा कोई जादू का खेल बताया है।

यह कविता मानवीकरण अलंकार का एक उत्तम उदाहरण है जिसमें निर्जीव वस्तुओं या प्रकृति को मानव की तरह व्यवहार करते हुए दिखाया गया है।

वस्तुपरक प्रश्न

[1 अंक]

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

उड़ गया अचानक लो भूधर,
फड़का अपार पारद के पर।
रव-शेष रह गए हैं निर्झर,
है टूट पड़ा भू पर अंबर।

(क) कवि ने क्या बाकी रह जाने की बात इन पंक्तियों में कही है?
(i) वर्षा का जल (ii) घने बादल
(iii) झरनों का सौंदर्य (iv) झरनों की आवाज़

(ख) भू पर अंबर टूट पड़ने का अर्थ है—
(i) बादल फटना
(ii) पहाड़ गिर जाना
(iii) बहुत तेज़ वर्षा होना
(iv) बिजली गिरना

(ग) भूधर का उड़ जाना अर्थात्—
(i) पहाड़ टूट जाना
(ii) पर्वत अदृश्य हो जाना
(iii) पेड़ टूट जाना
(iv) पेड़ अदृश्य हो जाना

(घ) प्रस्तुत काव्यांश में किस स्थिति का वर्णन है?
(i) बादल छा जाना (ii) धूप निकलना
(iii) सूर्य उदय होना (iv) तूफ़ान आना

उत्तर : (क) *(iv) झरनों की आवाज़*
व्याख्यात्मक हल : बारिश होने पर सब कुछ अदृश्य हो गया था । केवल झरने बहने की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी।

(ख) *(iii) बहुत तेज़ वर्षा होना*

(ग) *(ii) पर्वत अदृश्य हो जाना*
व्याख्यात्मक हल : बादलों ने पर्वतों को पूरी तरह ढक लिया था मानो कि पर्वत वहाँ से गायब हो गए हों।

2. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

धँस गए धरा में सभय शाल,
उठ रहा धुआँ जल गया ताल।
यों जलद-यान में विचर-विचर,
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

(क) धँस गए धरा में सभय शाल - पंक्ति में कौन सा अलंकार है?
(i) उपमा (ii) रूपक
(iii) मानवीकरण (iv) अनुप्रास

(ख) कहाँ से धुआँ निकलता नज़र आ रहा है ?
(i) वृक्षों से (ii) तालाब से
(iii) पर्वतों से (iv) झरनों से

(ग) इस काव्यांश में इंद्रजाल किसे कहा गया है?
(i) झरनों के शोर को
(ii) पर्वतीय क्षेत्र में बारिश के दृश्य को
(iii) दर्पण रूपी तालाब को
(iv) आकाश को छूते वृक्षों को

(घ) प्रस्तुत काव्यांश उस स्थिति को दर्शा रहा है जब—
(i) तेज़ धूप निकल आई थी
(ii) बादल छा गए थे
(iii) तेज़ वर्षा होने लगी थी
(iv) अंधकार छा गया था

उत्तर : (क) *(iii) मानवीकरण*

व्याख्यात्मक हल : डरना और डरकर छुप जाना मानव का व्यवहार है और यही व्यवहार वृक्षों को करते हुए दिखाया गया है।

(ख) *(ii) तालाब से*

व्याख्यात्मक हल : बारिश का पानी तालाब में गिर रहा है, तालाब का पानी फुहार बनकर ऊपर उठ रहा है। मानो तालाब जल रहा हो और उसमें से धुआँ निकल रहा हो।

(घ) *(iii) तेज़ वर्षा होने लगी थी*

वर्णनात्मक प्रश्न

[2 - 5 अंक]

लघु उत्तरीय प्रश्न (25 – 30 शब्द)

[2 अंक]

3. पावस में गिरि का गौरव कौन गा रहा है और उत्तेजना का संचार वह कैसे कर पाता है? [CBSE 2016]

उत्तर : कवि ने वर्षा ऋतु के दौरान पर्वतीय क्षेत्र के अलौकिक सौंदर्य का वर्णन किया है। वहाँ ऊँचाई से बहते हुए झरने झर-झर की ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं, जिसमें एक मधुर संगीत-सा महसूस हो रहा है। इसी आवाज को कवि ने झरनों द्वारा पर्वतों के गौरव में गाए जाने वाला गीत कहा है और इस मधुर संगीत को सुनकर नस-नस में आनंद और उत्तेजना का संचार हो रहा है।

4. कवि पंत ने पर्वत की विशालता को किस प्रकार चित्रित किया है? [CBSE 2013]

उत्तर : कवि सुमित्रानंदन पंत ने पर्वतीय क्षेत्र का जो सजीव वर्णन कविता में किया है उसे पढ़कर ऐसा महसूस होता है मानो हम स्वयं वहाँ उपस्थित हैं। दूर तक फैले पर्वतों की विशालता को दर्शाने के लिए कवि ने 'मेखलाकार पर्वत अपार' शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे स्पष्ट है कि वे पर्वत अपार अर्थात् दूर तक और मेखलाकार यानि गोलाकार में फैले हुए थे।

5. बादलों के उठने तथा वर्षा होने का चित्रण पर्वत प्रदेश में पावस के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए। [CBSE 2016]

6. वृक्ष आसमान की ओर चिंतित होकर क्यों देख रहे हैं? 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर लिखिए। [CBSE 2016]

उत्तर : पर्वतों के ऊपर लगे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष बिलकुल स्थिर थे, उनमें कोई हलचल नहीं हो रही थी। उन्हें देखकर कवि को महसूस हुआ मानो वे पर्वतों के हृदय से निकलने वाली ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ हों। ऊँचे वृक्षों के माध्यम से पर्वत आकाश को छूना चाहते थे, किंतु झूने में असमर्थ थे इसलिए उदास और चिंतित नज़र आ रहे थे। यह कहकर कवि ने प्रकृति में मानवीय भावों का बिंब प्रस्तुत किया है।

एहतियात

- *वृक्ष उदास नहीं हैं बल्कि उनकी स्थिरता में कवि को उनकी उदासी नज़र आ रही है।*

7. तालाब में पर्वतों का प्रतिबिम्ब देखकर कवि ने क्या कल्पना की है?

8. 'है टूट पड़ा भू पर अंबर', पर्वत प्रदेश में पावस कविता में कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? [CBSE 2020]

उत्तर : वर्षा ऋतु में आकाश बादलों से आच्छादित हो जाता है। जब वे घने बादल तेजी से बरसने लगते हैं तो ऐसा लगता है मानो आकाश ही धरती पर टूट पड़ा हो। ऐसा ही दृश्य कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' के माध्यम से कवि ने प्रस्तुत किया है। पर्वतीय क्षेत्र में नज़र आने वाले विशाल पर्वतों और आकर्षक झरनों को मूसलाधार वर्षा द्वारा ढक लिए जाने का प्रभावी शब्द-चित्र अंकित किया है।

9. वृक्षों को कवि ने उच्चाकांक्षाएँ क्यों कहा है?

उत्तर : मानव के हृदय में अक्सर आगे बढ़ने की, ऊँचा उठने की आकांक्षाएँ जन्म लेती रहती हैं। उन्हें केवल महसूस किया जा सकता है, देखा नहीं जा सकता। पर्वतीय क्षेत्र में बड़े-बड़े पहाड़ों पर लगे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष देखकर कवि ने ऐसी कल्पना की है मानो वह पर्वतों के हृदय से निकलने वाली ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ हों। वृक्ष इतने ऊँचे हैं कि आकाश को छूते हुए से प्रतीत हो रहे हैं किंतु वे गंभीर और उदास नज़र आ रहे हैं क्योंकि वे पर्वतों की आकाश को छूने की इच्छा को पूरा करने में असमर्थ हैं।

10. कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि पर्वत बादलों के पंख लगाकर उड़ गए हैं?

11. झरनों की तुलना किससे की गई है और क्यों? [CBSE Sample Paper 2020]

उत्तर : पर्वतीय क्षेत्रों का नजारा बेहद आकर्षक होता है और ऊँचाई से बहते हुए झरने उस दृश्य में चार चाँद लगा देते हैं। कवि ने बहते हुए झरने की आवाज को उनके द्वारा पर्वतों की प्रशंसा में गाए जाने वाला गीत कहा है और झरनों में उत्पन्न होने वाली सफेद झाग के कारण उन्हें सफेद चमकीले मोतियों की लड़ियाँ कहा है। इस प्रकार कवि ने

झरनों की आवाज़ की तुलना मधुर गीत से और उनके श्वेत झागमय सौंदर्य की तुलना मोती की लड़ियों से की है।

12. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर पर्वत के रूप-स्वरूप का चित्रण कीजिए। [CBSE 2018]

निबंधात्मक प्रश्न (60–70 / 80–100 शब्द) [4 एवं 5 अंक]

13. कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2014, 12, 10]

उत्तर : कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' के माध्यम से पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु के दौरान उत्पन्न होने वाले परिवर्तनों को दर्शाना प्रकृति प्रेमी कवि 'सुमित्रानंदन पंत' का उद्देश्य है, जिसे वे बहुत खूबसूरती के साथ पूरा करने में सफल हुए हैं। कवि ने विशाल, गोल आकार में फैले पर्वतों की तुलना मेखला से की है और उन पर लगे हज़ारों पुष्पों को पर्वतों की आँखें कहा है, जिनसे वे नीचे तालाब रूपी दर्पण में अपनी छवि को लगातार निहार रहे हैं। एक ओर झरने बह रहे हैं जिनकी आवाज कवि को मधुर संगीत का एहसास करा रही है और उनकी सफेद झाग मोती की लड़ियों-सी सुंदर लग रही है। पर्वतों पर लगे वृक्ष देखकर ऐसा लगता है कि उनके माध्यम से पर्वत आकाश को छूने की कोशिश कर रहे हैं। तभी अचानक घने बादल और मूसलाधार वर्षा इस संपूर्ण दृश्य को ढक लेते हैं।

पावस ऋतु के दौरान पर्वतीय क्षेत्र के पल - पल परिवर्तित होते हुए प्राकृतिक दृश्यों का ऐसा सजीव वर्णन कवि ने किया है कि हम ऐसा महसूस करने लगते हैं मानो हमारे चारों ओर की दीवारें कहीं विलीन हो गई हैं और हम स्वयं उन नज़ारों का आनंद ले रहे हैं।

एहतियात

➥ *प्रतिपाद्य लिखने के लिए छात्र कविता का सार लिखे तथा संदेश लिखते हुए अंत करें।*

14. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में झरने पर्वत का गौरव गान कैसे करते हैं? [CBSE 2012]

15. पर्वत प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है परंतु पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के दैनिक जीवन में क्या कठिनाइयाँ उत्पन्न होती होंगी, उनके विषय में लिखिए। [CBSE 2015]

उत्तर : इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्षा ऋतु के दौरान प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है। विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में यह प्राकृतिक दृश्य अलौकिक प्रतीत होने लगता है। बड़े-बड़े पहाड़, पेड़, झरने, तालाब जो पर्वतीय क्षेत्र में आकर्षण का केंद्र बने होते हैं, वे बादल और मूसलाधार वर्षा से अदृश्य हो जाते हैं। पल-पल होने वाला यह परिवर्तन सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। पर्यटकों को यह दृश्य अत्यधिक लुभाते हैं। किंतु वहाँ रहने वाले लोग वर्षा ऋतु में किन परेशानियों का सामना करते हैं, इसकी शायद हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

दिन-प्रतिदिन की जरूरतें पूरी होना मुश्किल हो जाता है। खाद्य एवं पेय पदार्थ उन तक पहुँच नहीं पाते हैं। बच्चों का विद्यालय जाना, अन्य लोगों का अपने रोजगार चलाना बहुत कठिन हो जाता है। यहाँ तक कि अधिक वर्षा से बाढ़ का खतरा बना रहता है, पहाड़ों के धँसकने का भी डर बना रहता है। इस तरह वर्षा ऋतु के दौरान आने वाली अनेक प्राकृतिक आपदाओं का भय वहाँ के निवासियों में हरपल बना रहता है। पर्वतीय इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए यह स्थिति सिर पर लटकी तलवार के समान होती है।

16. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर पावस ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र के प्राकृतिक परिवर्तनों और सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [Delhi Gov. 2021]

17. पर्वतीय प्रदेश में वर्षा के सौंदर्य का वर्णन 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए। [CBSE 2019]

उत्तर : वर्षा ऋतु का इंतजार सभी को सालभर रहता है। बारिश आने से पेड़-पौधे धुल जाते हैं, नदियों में जल स्तर बढ़ जाता है। सभी ओर हरियाली दिखाई देने लगती है। वातावरण में ताज़गी आ जाती है। ऐसा लगता है मानो वर्षा ऋतु धरती में नई जान डाल देती है।

पर्वतीय क्षेत्र में तो वर्षा ऋतु का आगमन बेहद खूबसूरत परिवर्तन लेकर आता है। पल-पल में प्राकृतिक नजारे ऐसे बदलते हैं मानो आँखों के सामने कोई फिल्म के दृश्य बदल रहे हों। बड़े-बड़े पहाड़, पर्वत, तालाब, झरने यूँ ही मन को लुभाते हैं, जब बादल इन्हें ढक लेते हैं तो ऐसा लगता है मानो वे बादलों के पंख लगाकर कहीं उड़ गए हैं। वर्षा शुरू होने पर तो संपूर्ण दृश्य ऐसा गंभीर हो जाता है जैसे भयानक वर्षा ने सब को भयभीत कर दिया हो। यह अलौकिक दृश्य स्वयं इंद्र देवता द्वारा खेला जा रहा कोई जादू का खेल-सा नज़र आता है।

वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न [2 अंक]

1. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर पर्वत के रूप स्वरूप का चित्रण कीजिए।

उत्तर मेखलाकार पर्वत अर्थात पर्वत करधनी के आकार का है जिसके चरणों मे एक पारदर्शी दर्पण रूपी ताल है। पर्वत अपना महाकार प्रतिबिंब ताल में निहारते हुए अपने सहस्र दृग रूपी सुमनों से निहारकर अचम्भित हो रहा है। मोती की मालाओं के समान सुंदर झरने कल-कल की ध्वनि कर पर्वत के गुणगान गाते हुए प्रतीत होते हैं। वर्षा होने पर पर्वत बादलों से घिर जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे पंख लगाकर उड़ गया हो, शाल के विशाल जमीन में धंसे से प्रतीत होते हैं। पर्वत प्रदेश मे पावस ऋतु का दृश्य अत्यंत रमणीय होता है।

[CBSE Topper 2018]